SA – I (2016-17)
Subject :- Hindi
Class – VI

पाठ-9 (मैं जुलाहा)

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 यह पाठ किस शैली में लिखा गया है ?
(क) वर्णन शैली में (ख) आत्मकथात्मक शैली में
(ग) चित्रण शैली में
उत्तर - (ख) आत्मकथात्मक शैली में

प्रश्न 2 जुलाहे को और किन - किन नामों से पुकारा जाता है ?
उत्तर - जुलाहे को कोरी, बुनकर और तंतुवाय के नामों से पुकारा जाता है।

प्रश्न 3 जुलाहे किसे अपना पूर्वज स्वीकार करते हैं ?
उत्तर - विधाता को

प्रश्न 4 प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य किस दशा में रहता था ?
उत्तर - प्रारंभिक अवस्था में मनुष्य नग्न अवस्था में रहता था।

प्रश्न 5 प्राचीन ग्रंथों में जुलाहे के महत्व को किस रूप में स्वीकार किया गया है ?
उत्तर - प्राचीन ग्रंथों में जुलाहों को बहुत सम्मान दिया गया है।

प्रश्न 6 ढाका के मलमल की क्या विशेषता थी ?
उत्तर - ढाका के मलमल का पूरा थान एक अँगूठी में से निकल जाता है।

प्रश्न 7 जुलाहे का कर्म पवित्र किस प्रकार प्रकार है ? स्पष्ट करो ?
उत्तर - दूसरों के तन को ढक कर उनकी लाज बचाना, सरदी - गरमी से रक्षा करना, शरीर के सौंदर्य में वृद्धि तथा परिश्रम से आजीविका कमाना आदि से स्पष्ट होता है कि जुलाहों का कर्म पवित्र है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 महात्मा कबीर के विषय में पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

उत्तर - (क) संत कबीर बहुत बड़े विद्वान पुरुष थे।
(ख) वे जाति से जुलाहा थे।
(ग) वे कपड़ा बुनते और दोहे सुनाते थे।
(घ) अनपढ़ होते हुए भी समाज में उनका बहुत सम्मान था।
(ङ) उनका व्यक्तित्व अत्यंत महान था। वे निर्भीक एवं ईश्वर के उपासक थे।

प्रश्न 2 जुलाहों का दुर्भाग्य कब और कैसे जागा?

उत्तर - जुलाहों का दुर्भाग्य तब जागा जब अंग्रेजी शासन ने मशीनी वस्त्रों को बढ़ावा देना शुरू कर दिया। जुलाहों पर कई प्रकार के कर लगाए गए तथा उन पर अनेक अत्याचार किए गए।

प्रश्न 3 महात्मा गाँधी ने जुलाहों के हित के लिए क्या काम किया?

उत्तर - महात्मा गाँधी ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई तथा स्वदेशी वस्त्रों का समर्थन किया। उन्होंने स्वयं चरखा चलाकर सूत काता और खादी के उद्योग को प्रोत्साहित किया। उन्होंने "खादी ग्रामोद्योग" का विशेष प्रचार किया।

प्रश्न 4 बया के घोंसले की कुछ विशेषताएँ बताइए?

उत्तर - बया पक्षी पेड़ों के साथ बोतलों-सी आकृति के घोंसले बुनते हैं। इन घोंसलों को देखकर ऐसा लगता है मानो उलटी बोतलें लटक रही हों। इनकी सुंदरता पर व्यक्ति मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता।

प्रश्न 5 मनु के संबंध में जुलाहा क्या कहना चाहता है?

उत्तर - मनु के संबंध में जुलाहा कहता है कि उन्होंने हमारे वस्त्रों की बहुत प्रशंसा की। उन्होंने कहा - "यदि आप गृहस्थी में

सुख चाहते हैं तो गृहिणियों को सदा वस्त्र आदि देकर उनका सम्मान किया करें।

प्रश्न 6 प्रकृति में कौन-कौन से प्राणी बुनने की कला का सुंदर प्रदर्शन करते हैं?

उत्तर - प्रकृति में ऐसे बहुत-से प्राणी हैं जो बुनने की कला में अत्यंत निपुण हैं। मकड़ी बड़ी कुशलता से अपना जाला बुनती है। तथा पक्षी पेड़ो के साथ बोतलों-सी आकृति के घोंसले बुनते हैं। जुलाहा को शायद बुनने की प्रेरणा इन्हीं से मिली हो।

प्रश्न 7 रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

(क) जुलाहा ने लोगों की नग्नता को दूर किया।

(ख) वेदों में भी जुलाहों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई है।

(ग) तथा पक्षी बुनने की कला की प्रेरणा देने में जुलाहों का गुरु रहा होगा।

(घ) संत कबीर जुलाहे ही तो थे।

(ङ) महात्मा गाँधी ने स्वदेशी आंदोलन चलाया।

प्रश्न 8 सरलार्थ लिखिए: जात न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥

सरलार्थ ⇒ कबीरदास कहते हैं कि मनुष्य की जाति कोई नहीं पूछता, सब उसके गुण और ज्ञान के बारे में ही पूछते हैं। तलवार का मोल-भाव तो करो परंतु उसे म्यान में ही पड़े रहने दीजिए।

प्रश्न 9 आशय स्पष्ट कीजिए:

(क) विधाता सूर्य की किरणों द्वारा दिन रूपी सफेद वस्त्र बुनता है और अंधकार से रात्री का काला वस्त्र।

आशय ⇒ जुलाहों ने विधाता को अपना पूर्वज बताया है। ईश्वर सूरज द्वारा दिन रूपी सफेद कपड़ा बुनता है अर्थात् ईश्वर दिन बनाता है और अंधेरे से रात रूपी कपड़ा बुनता है अर्थात् रात बनाता है।

(ख) हमारा कर्म बहुत ही पवित्र है।
आशय - जुलाहों का कर्म पवित्र माना जाता है क्योंकि ये दूसरों को तन ढकने तथा लाज बचाने के लिए वस्त्र देते हैं।

(ग) अब खादी आधुनिकता और फैशन का पर्याय बन चुकी है।
आशय - आजकल खादी का प्रचलन बहुत बढ़ गया है। विदेशों में भी खादी बहुत पसंद की जा रही है। आधुनिक युग ने युवा पीढ़ी के लिए खादी फैशन का साधन बन गई है।

पाठ-10 (मनुष्यता)

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 मृत्यु एक कटु सत्य है। क्या हमें इससे डरना चाहिए?
उत्तर - मृत्यु से हमें कभी नहीं डरना चाहिए।

प्रश्न 2 आप किन कार्यों द्वारा मृत्यु को चिरस्मरणीय बना सकते हैं?
उत्तर - दूसरों की मदद करके, उदारता और परोपकार के द्वारा हम मृत्यु को चिरस्मरणीय बना सकते हैं।

प्रश्न 3 क्या हमारी उदार भावना तिरस्कृत होती है? इसे सिद्ध करने के लिए कवि ने किनका उदाहरण दिया है?
उत्तर - हमारी उदार भावना तिरस्कृत होती है। इसके लिए कवि ने भगवान बुद्ध का उदाहरण दिया है।

प्रश्न 4 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना किन पंक्तियों में अभिव्यक्त होती है?
उत्तर - 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना इन पंक्तियों में अभिव्यक्त होती है -
मनुष्य मात्र बंधु है, यही बड़ा विवेक है,
पुराण पुरुष स्वयंभू पिता की प्रसिद्ध एक है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 मृत्यु को चिरस्मरणीय कैसे बनाया जा सकता है? मनुष्यता कविता के आधार पर बताइए?
उत्तर - जो दूसरों के प्रति सहानुभूति, दया, सहयोग की भावना रखता है उसे मृत्यु के बाद भी लोग स्मरण करते हैं। कवि ने मृत्यु से नहीं डरने लिए कहा है। साथ ही वह ऐसी मृत्यु की वकालत करता है जिसके बाद लोग उसे याद करें।

प्रश्न 2 पशु, मनुष्य और देवताओं में क्या मूल अंतर है?

उत्तर - पशु की यह प्रवृत्ति होती है कि वह खुद ही चरता रहता है। उसे दूसरे की परवाह नहीं होती। जबकि मनुष्य दूसरों के लिए जीता और मरता है। उसमें उदार भावना कूट-कूटकर भरी होती है। वह अपने स्वार्थ को त्याग कर मानव मात्र के लिए जीता है। देवता तो सभी के रक्षक होते हैं। उसके लिए समस्त प्राणी जगत एक है।

प्रश्न 3 इस कविता का सार सरल शब्दों में कहिए?

उत्तर - 'मनुष्यता' कविता में कवि ने उदारता, परोपकार और सहानुभूति की भावना को मनुष्यता के लिए श्रेष्ठ बताया है। कवि कहता है कि हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए। मृत्यु भी ऐसी हो कि मरने के बाद भी लोग याद करें। जो केवल अपने लिए ही जीते हैं वह जीना कोई जीना नहीं है। यह पशु प्रवृत्ति है जो केवल खुद ही चरता रहता है। मनुष्य वही है जो अपनी स्वार्थ त्याग कर दूसरों के प्रति दया, परोपकार और सहानुभूति की भावना रखे। ऐसी उदारता को तो सरस्वती भी गुणगान करती है। सारी सृष्टि ऐसी उदारता को ही पूजती है। भगवान बुद्ध की उदारता को विरूद्धवाद के नाम से जाना गया। सारा संसार उसी के आगे नतमस्तक होता है जो परोपकार करे। सच्चा मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे। फल के अनुसार कर्म के भेद अनेक हैं परंतु फल देने वाला तो सबका ईश्वर एक ही है। यह अनर्थ ही कहा जाएगा यदि मनुष्य मनुष्य के दुखों की परवाह न करे। इस प्रकार कवि सच्ची मनुष्यता के लिए दया, परोपकार को आवश्यक मानता है।

प्रश्न 4 "विरूद्धवाद बुद्ध का, दया प्रवाह में बहा
विनीत लोकवर्ग, क्या न सामने झुका रहा?"
- इन पंक्तियों के संदर्भ में 'सहानुभूति' को व्याख्यायित कीजिए।

उत्तर - विरूद्धवाद से तात्पर्य है कि भगवान बुद्ध ने ब्राह्मणवाद का विरोध करके जिस बौद्ध धर्म को स्थापित किया, उसमें दया और करुणा का भाव निहित है। लोगों ने इस धर्म को

अपनाया और बुद्ध के सामने झुके। बौद्ध धर्म मनुष्यता मात्र के प्रति दया और सहानुभूति का पक्षधर है।

प्रश्न-5. कवि ने हम सभी को एक ही पिता की संतान कहा है। फिर जाति, रंग, वर्ण आदि का भेद हममें कैसे उपजा?
उत्तर = कवि ने हम सभी को एक ही पिता की संतान माना है, फिर भी आज मानव मानव में भेद किया जाता है। यह भेद रंग, वर्ण, जाति के आधार पर होता है। इसका स्पष्ट कारण अंधविश्वास, असमानता और स्वार्थपरता की भावना ही दृष्टिगोचर होती है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :
(क) अखंड आत्मभाव जो असीम विश्व में भरे।
आशय = कवि ने ऐसे मानव की कामना की है, जो अटूट आत्मभाव अर्थात् अपनापन सारे विश्व में भर दे।

(ख) वशीकृता सदैव ही बनी हुई स्वयं मही।
आशय = जो दूसरों का उपकार करते हैं, उनके लिए तो सारी पृथ्वी अपने आप वश में हो जाती है। अर्थात् समस्त संसार ऐसे मानव के आगे झुक जाता है।

(ग) फलानुसार कर्म के अवश्य बाह्य भेद हैं।
आशय = फल प्राप्ति के अनुसार बाहरी रूप से कर्म के अनेक भेद हैं।

(घ) परंतु अंतरैक्य में प्रमाणभूत वेद हैं।
आशय = कर्म अनेक प्रकार के हो सकते हैं, परन्तु ~~वास्तविकता~~ वास्तविकता वही है, जो प्रमाणित रूप में वेदों में समाहित है।

प्रश्न-7. 'मनुष्यता' कविता का केन्द्रीय भाव लिखिए।
उत्तर = मनुष्य में उदारता, परोपकार और सहानुभूति की भावना होना चाहिए। मनुष्यता का अनिवार्य तत्त्व है, स्वार्थ को त्यागकर दूसरों की मदद करना।

पाठ-11 (नन्हा - सा पौधा)

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 'नन्हा - सा पौधा' पाठ में स्त्री पौधे को क्यों उखाड़ना चाहती है ?

उत्तर - क्योंकि स्त्री को लगता है कि इस पौधे की वजह से उसके बच्चों की भाषा और संस्कृति बिगड़ रही है।

प्रश्न 2 बच्चों ने नन्हा-सा पौधा क्यों लगाया था ?

उत्तर - बच्चों ने एक पेड़ लगाने का खेल खेला था। इसलिए उन्होंने नन्हा-सा पौधा लगाया था।

प्रश्न 3 स्त्री और पुरुष को पौधे से क्या डर था ?

उत्तर - स्त्री और पुरुष को डर था कि कहीं दूसरी जाति के लोग उनकी जमीन पर कब्जा न कर ले।

प्रश्न 4 'नन्हा-सा पौधा' किसका प्रतीक है ?

उत्तर - 'नन्हा - सा पौधा' बच्चों में एकता का प्रतीक है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 'नन्हा - सा पौधा' पाठ में स्त्री और पुरुष की मानसिकता कैसी है ?

उत्तर - स्त्री और पुरुष की मानसिक सोच बहुत छोटी है। वे नन्हे पौधे को झाड़ी की जड़ मानते हैं तथा उसे उखाड़ फेंकना चाहते हैं। स्त्री का मानना है कि इस पौधे की वजह से उसके बच्चों की भाषा और संस्कार चौपट हो रहे हैं। इस पाठ से स्त्री - पुरुष की संकीर्ण मानसिकता उजागर होती है।

प्रश्न 2 क्या कारण था कि स्त्री और पुरुष मिलकर भी नन्हे - से पौधे को नहीं उखाड़ पाए ?

उत्तर - स्त्री और पुरुष मिलकर भी नन्हे पौधे को नहीं उखाड़ पाए क्योंकि वह नन्हा पौधा बच्चों ने लगाया था। बच्चे भावात्मक एकता के प्रतीत होते हैं। वे जाति - पाति, वर्ण, रंग आदि के भेद को भूल कर एक साथ खेलते हैं।

प्रश्न 3 पौधा बढ़ रहा है। - यह किस बात का प्रतीक है ? 'नन्हा - सा पौधा पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर - पौधा बढ़ रहा है - यह बढ़ती एकता का प्रतीक है। नन्हे बच्चे जाति - पाति को भूलकर मिलकर खेलते हैं। इस प्रकार पौधे के साथ - साथ उनमें एकता भी बढ़ रही है।

प्रश्न 4 जिसे पौधे को स्त्री - पुरुष सम्मिलित प्रयास से भी उखाड़ नहीं पाए उसे बच्चों ने आसानी से ~~कैसे~~ उखाड़ लिया। कैसे ?

उत्तर - पौधा बच्चों के मन की बात को समझता है। स्त्री - पुरुष की तुलना में एकता की भावना बच्चों में अधिक होती है।

प्रश्न 5 बच्चे और पेड़ - पौधे किस भाषा को समझते हैं ?

उत्तर - बच्चे और पेड़ - पौधे भाईचारे की भाषा समझते हैं। उनमें किसी प्रकार का जातिगत भेदभाव नहीं होता।

****